संरक्षक

प्रो. एस.एस.पाण्डेय
कुलपति - विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

◆

डॉ.सुभाषचंद्र आर्य
कुलसचिव

आयोजन समिति

डॉ.रामकुमार अहिरवार
संयोजक एवं विभागाध्यक्ष - मो. 09827094308

◆

डॉ.धीरेन्द्रसिंह सोलंकी
उपाचार्य - मो. 09425458880

◆

डॉ.विश्वजीतसिंह परमार
प्राध्यापक - मो. 09424500307

◆

डॉ.रमन सोलंकी
उत्खनन प्रभारी - मो. 09893402317

◆

डॉ.हेमन्त लोदवाल
मो. 09425093294

◆

डॉ.मुकेश कुमार शाह
मो. 08819978673

◆

डॉ.रितेश लोट
मो. 09907209926

◆

डॉ.अंजनासिंह गौर
मो. 09229564409

◆

श्रीमती ममता सिंह
मो. 09424850265

सिंहस्थ 2016 सिंहस्थ 2016

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

साहित्य एवं पुरातत्त्व में

महाकाल और सिंहस्थ

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

13 एवं 14 मई 2016

प्रति,

आयोजन स्थल
सेमिनार हॉल, प्रा.भा.इति.सं. एवं
पुरातत्त्व अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

प्रेषक :
डॉ.रामकुमार अहिरवार
विभागाध्यक्ष
प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) 456010
दूरभाष - 0734 - 2511019 मो. 9827094308
ई मेल - rkahirwar1968@gmail.com

सिंहस्थ 2016 सिंहस्थ 2016

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

साहित्य एवं पुरातत्त्व में

महाकाल और सिंहस्थ

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

13 एवं 14 मई 2016

:: प्रायोजक ::
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

साहित्य एवं पुरातत्त्व में

महाकाल और सिंहस्थ

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

प्राचीन नगर–जनपद राज्यों में म.प्र. के उज्जैन जिला का अपना विशिष्ट स्थान है, जिसकी राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, कला–स्थापत्य, लोक परम्परा आदि दृष्टियों से अपनी गौरवमयी परम्परा रही है।

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका पुरी ।
द्वारकावती चैव सप्तैता मोक्ष्य दायिकाः।।

अर्थात् – अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिकापुरी, द्वारकावती ये भारत की सप्त मोक्ष्य दायिनी पुरियाँ है , इसमें अवंतिका नगरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

जैसा कि आप सभी को विदित है कि धार्मिक नगरी उज्जयिनी में एक विशाल सिंहस्थ–कुंभ मेले का आयोजन किया जा रहा है, जिसका ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। हरिद्वार, इलाहाबाद एवं नासिक की भाँति यह नगरी विभिन्न सम्प्रदायों की शरण स्थली रही है। लेकिन उज्जयिनी की अपनी एक प्राचीन ऐतिहासिक समृद्ध परम्परा है। पौराणिक सन्दर्भ से तो उज्जयिनी क्रमशः स्वर्णश्रृंगा, कुशस्थली, अवन्तिका, अमरावती, चूड़ामणिपुरी, पद्मावती का ही परिवर्तित नाम है। कथासरित्सागर में सतयुग, द्वापर, त्रेता तथा कलियुग में क्रमशः इसके पद्मावती, भोगवती, हिरण्यवती एवं उज्जयिनी नामाभिधान होने के उल्लेख प्राप्त होते है और कदाचित् यही उज्जयिनी अपने अपभ्रंश रूप आधुनिक उज्जैन नाम से प्रतिष्ठित हुई।

ज्योतिर्लिंग महाकाल एवं सिंहस्थ परम्परा की धार्मिकता को लेकर अनेक विद्वानों ने कार्य किया। उज्जयिनी में अनेक ऐसे मठ–मंदिर व परम्पराएँ है जो ऐतिहासिक दृष्टि से अपनी महत्ता रखते है जिनका कि अध्ययन अभी शेष है।

उज्जयिनी के ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, लोक परम्परा इत्यादि को लेकर विद्वत्जन संगोष्ठी में विचार विमर्श करेगें, जिससे शोधार्थी से लेकर जन–सामान्य जिज्ञासु वृन्द सही इतिहास को जान सके। इसी उद्देश्य को लेकर प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला में द्वि–दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आप जैसे विद्वानों के विचार विमर्श से ही संगोष्ठी अपने सफलता को प्राप्त करेगी। संगोष्ठी में निम्न बिन्दुओं पर शोध–पत्र आमंत्रित है –

1. महाकाल की प्राचीनता एवं विकास
2. संस्कृत, पाली–प्राकृत साहित्य में महाकाल
3. अभिलेखों में महाकाल, सिक्कों में महाकाल, मूर्तिकला में महाकाल
4. महाकाल मंदिर स्थापत्य एवं शैली
5. महाकाल एवं उनका परिवार
6. बौद्ध एवं जैन साहित्य में महाकाल
7. अन्य धार्मिक सम्प्रदाय एवं महाकाल
8. ज्योतिष में महाकाल एवं सिंहस्थ
9. ज्योर्तिलिंग महाकाल और पूजन–परम्परा
10. पुराणों में महाकाल
11. लोक साहित्य में महाकाल
12. तांत्रिक साहित्य में महाकाल
13. सिंहस्थ महापर्व का उद्भव और विकास
14. सिंहस्थ और अखाड़े
15. सिंहस्थ महापर्व में शाही स्नान और उसका महत्त्व
16. सिंहस्थ में विविध आचार्यों का योगदान
17. उज्जयिनी में विविध मठ, मंदिर
18. उज्जयिनी में बौद्ध, जैन एवं अन्य सम्प्रदाय
19. शिप्रा का सांस्कृतिक महत्त्व
20. सिंहस्थ का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पक्ष

नोट – उपरोक्त बिन्दुओं के अतिरिक्त उज्जयिनी के किसी भी पक्ष को लेकर शोध–पत्र आमंत्रित हैं।

डॉ.रामकुमार अहिरवार
संयोजक एवं विभागाध्यक्ष

अनुदेश

1. चयनित शोधपत्रों का प्रकाशन ISBN नं. पुस्तक में किया जावेगा। पुस्तक का प्रकाशन शीघ्र ही सिंहस्थ महापर्व अवसर पर किया जाना संभावित है।

2. शोधपत्र हिन्दी में कृतिदेव–10 अथवा अंग्रेजी भाषा में टाइम्स न्यू रोमन, एम.एस.वर्ड फार्मेट में टाइप कर साफ्टकॉपी के साथ हार्ड कॉपी में प्रस्तुत करना होगा।

3. किसी प्रकार का यात्रा भत्ता देय नहीं होगा एवं आवास की व्यवस्था प्रतिभागी की स्वयं की रहेगी।

4. पंजीयन शुल्क – प्राध्यापकों एवं प्रतिभागियों के लिए रूपये 600 एवं शोधार्थियों के लिए रूपये 400 निर्धारित किया गया है। पंजीयन प्रारंभ है।

5. शोध–पत्र के शीर्षक के सम्बंध में संयोजक को बताना उचित होगा। जिससे शोध–पत्रों की पुनरावृत्ति से बचा जा सके।

नोट – शोध पत्र 15 अप्रैल तक भेजना अनिवार्य है।

आयोजक :

प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) 456010
दूरभाष - 0734-2511019 मो. 9827094308
ई मेल - rkahirwar1968@gmail.com